Vol 5 Issue 8 Feb 2016

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

Golden Research Thoughts

International Recognition Multidisciplinary Research Journal

ISSN: 2231-5063 Impact Factor : 3.4052(UIF) Volume - 5 | Issue - 8 | Feb - 2016

केदारनाथ सिंह के काव्य में सामाजिक बोध

डी. व्ही. गिरि
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मंठा.

प्रस्तावना

केदारनाथसिंह जी का जन्म 7 जुलाई 1934 (चकिया, बलिया, उत्तर प्रदेश मे हुआ शिक्षा एम.ए. पी.एच.डी. हिंदी) जवाहरलाल नेहरू केद्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में हिंदी के प्राध्यापक कवि एंव समीक्षक तीसरा सप्तक के महत्वपूर्ण कविः आधुनिक कविता मेंवैशिष्ट्यपुर्ण योगदान देनेवाले कवियों में से एक कवि भारतीय ऑचलिक परिवेंश का अत्यंत संवेदनशील एवं प्रभावी चित्रण करनेवाले कुशल कवि उनकी रचनाऍः अभी बिल्कुल अभी,जमीन पक रही है, यहॉं से देखो, अकाल में सारस (कविता संग्रह) वाघ, उत्तर कबीर और अन्य कविताऍं, तालस्ताय और सायकिल आलोचनाः कल्पना और छायावाद, आधुनिक हिंदी कविता मेंबिंबविधान मेरे समय के शब्द, कब्रिस्तान में पंचायत मेरे साक्षात्कार सम्मानः मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, कुमारन आशान पुरस्कार, जीवन भारती सम्मान, दिनकर पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, व्यास सम्मान।

केदारनाथ सिंह धरती से जुडे हुए कवि है। उन्हेंगॉव की मिट्‌टी तथा उसकी सुगन्धि से प्रेम है। उन्होंने अपनी कविताओं को विविध बिम्बों से सॅंवारने का प्रयास किया है। प्रकृति से बचपन से उनका लगाव रहा है।खुले कछार, मक्का के खेत और दुर–दूर तक फैली पगडंडियों की छाप उनकी कविताओं में विद्यमान है। इनके वर्ण विषय खेत मेड, पगडंडि ऋतु, उत्सव, प्रकृति आदि है। प्राचीन मूल्यों और मर्यादाओ के रक्षा की चिन्ता केदारनाथ सिंह की कविताओ मे विद्यमान है। वे भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थावान कवि है।

केदारनाथजी की कविता 'एक पारिवारिक प्रश्न'मे वे कहते है।

छोटे से ऑंगन में
मॉं ने लगाये हैं
तुलसी के बिरवे दो
पिता ने उगाया है
बरगद छतनार
मैं अपना नन्हा गुलाब
कहॉं रोप दूॅं!

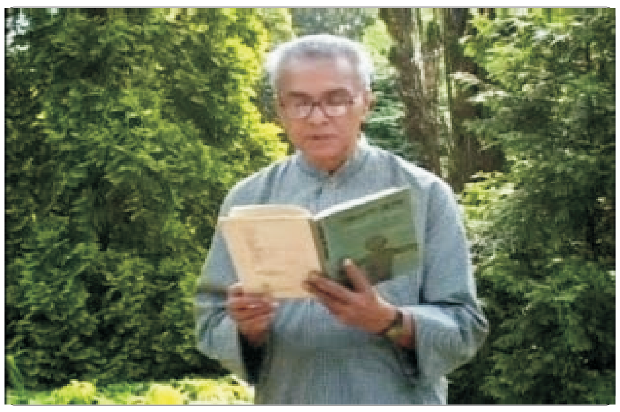

उनकी दृष्टि प्रकृतिके अछूते रूपों को स्पर्श करती है जिन पर अन्य कवियों की दृष्टि नही गयीथी। सौदर्य के सुक्ष्म चित्र उनकी कविताओं में देखने को मिलते हैं।'दुपहरिया','फागुन का गीत', 'पात' नये आ गये','धानो का गीत','विदा–गीत','बसन्तगीत'कवि की भाषा में लोकजीवन की भीनी गन्ध है। यह गन्ध भी एक खास अंचल की गंन्ध है। उन्की कविताओं में मुख्यतः प्रकृति कें विविध रूप दिखाई देते है। नदी, नाले, फूल, जंगल, तट, सरसों के खेत , कोयल की कूक, पुरवा पछूवा, रात, चिडिया, घास, फुनगी आदि प्रकृति चित्रण उनकी कविताओं में दिखाई देता हैं।

ओस भरे
कॉंपते गुलाब की टहनी पर
तितली के पंखोसी सटी हुई
धूप!

उनके 'जमिन पक रही है ' इस कविता संग्रह की कविता ओ में 'भूख', 'रोटी', 'नमक', 'दाना', कुल्हाडी, चुल्हा, आलू सभी पारिवारिक जरूरतों पर लिखी कविताए है। उनकी 'रोटी' शिर्षक कविता में कवि ने 'रोटी' को दुनीयाकी सबसे आश्चर्य जनक चीज कहा है। जब वह उसे आग से निकालते हुए देखता है। हर बार वह उसे पहले से ज्यादा सुर्ख और पकी हुई लगती है। यह रोटी के लिए आदमी के शास्वत संघर्ष की अभिव्यक्ती है। 'बैल' इस कविता के माध्यंम से वह मजबूर आदमी का चि़त्र प्रस्तुत करना चाहता है, जो दूसरों के इशारों से चलता है। सांकेतिकता केदार जी की कविताओं की खासियत है।

वह चल रहा है और सिर्फ एक पगडंण्डी
उसे याद है। जो उसकी पूँछ की तरह
उसे हॉके लिये जा रही है।

उनकी कविताओं में वास्तविकता, व्यवस्था की क्रुरता, आदमी की पीडा, उसके संघर्ष का चित्रण दिखाई देता है। उन्हें लोहे से अधिक आदमी के दिमाग पर विश्वासहै। उनकी कविताओं मे कोई भावुकता नही समझदारी है। कम शब्दों का प्रयोग करके ज्यादा बताने का प्रयास उनकी कविताओं में दिखाई देता है।

एक फावडे की तरह उससे पीठ टिकाकर
एक समूची उम्र काट देने के बाद
मै इस नतीजे पर पहुँचा हूँ
कि लोहा नहीं
सिर्फ आदमी का सिर उसे तोड सकता है।

गॉव और लोकजीवन के प्रति एक अजीब ललक उनके मन में है। अपनी किसानी संवेदना में लोक कवियों के निकट पहुच जाते है। 'अकाल में सारस' यह काव्य संग्रह सांकेतिक और अर्थवान है। इस संग्रह की कविताऍ उत्कृट आशा और अदम्य जिजीविषा की कविताऍ है। 'अकाल मे दूब' कविता में भयानक सूखे में पिता को जब दूब की उपस्थिती का पता चलता है, तो अंधेरे में भी उनका चेहरा चमक उठता हैं और वे कहते है–

'है अभी बहुत कुछ है।
अगर बची है दूब.....................'।

केदारजी की कविता उसकी संघषशील चेतना को रेखॉकीत करने वाली, मनुष्य के जीवन शक्ति को तलाश करनेवाली कविता है। जहॉ कहीं भी उन्हें जीवन दिखाई देता हैं वे खुश होते है –

खुश हूँ– आती है रह रह कर
जीनेंकी सुगन्ध बह बह कर।

केंदारनाथसिंह वैविध्यपूर्ण शब्दार्थो के कवि है। तत्कालीन एकोन्मुखता को कवि नें जीवन की समग्रता की और मोडदिया है। एक में बजबजाहट थी तो दूसरी में बौध्दिक रूखाई। उन्होंने कविता को उनसे मुक्त कर संवदेनात्मक बौध्दिकता से जोड दिया। इस संवेदना मेंविस्तार और गहराई दोनो है। इसमें युगीन चुनौतियॉं है, फसले, रोटी, मॉं, अनजानी प्रतिध्वनियॉ और आहटे भी जीवन का पर्व इन्हीका सौदर्यात्मक रूपान्तरण उनकी कविता है।

'यहॉ से देखो' इस कविता संग्रह को पढते समय कविता की सहज शक्ति का अनुभव हो जाता है। बेहध सीधी सरल दिखने वाली कविताए, उसकी भाषाः उसकी बिम्ब योजना, उसका लहजा सबकुछ बहुत आत्मीय और सहज लगता है।

साथियों, रात आयी, अब मै जाता हूँ
इस आने जानेका वेतन पाता हूँ
जब ऑखलगे तब सुनना धीरे–धीरे
इस तरह रातभर बजती है जंजीरे।

यह विशेष रूप से लक्ष्य करने की बात हैं, कि केदारजी के इस संग्रह का काव्यसंसार एक निहायत साधारण और परिचित संसार है–ठंड और धूल भरा संसार जहॉं कविके साथ ही हम सब की एडियॉं बराबर घिसती जा रही है। प्रस्तुत संग्रह में ''धूल'' शब्द का बार बार प्रयोग हुआ है। '' कस्बे की धूल'' कविता में कवि लिखता है–

मैजानता हूँ क्योंकि यह धूल।
इस कस्बे की, और मेरे पूरे देश की।

सबसे जिन्दा और खूबसूरत चीज है।
सबसे बेचैन सबसे सक्रिय।
'बाजार' शीर्षक कविता में कवि लिखता है–
'बाजार मे क्या है'। मैने पूछा। बाजार मे धूल है।
उसनें हॅसते हूए कहा ।....... मैने पूछा ''धूल''
'' धूल मे क्या है''। 'जनता' उसने बेहद सादगी से कहा।

उनकी कविताओं मे वास्तविकता का चित्रण देखने को मिलता है। इसलिए कविताओ को वास्तविकता की कसौटी पर टटोलकर वह देखते है।वह गति का, स्पन्दन का, हरकत का पक्षधर है अर्थात कुछ बदलना चाहता है।वे सामान्य सी हरकत को सांकेतिक बनाने और उसमें से काव्यात्मक अर्थ खींच लेने की अद्‌भूत क्षमता रखते है उनके द्वारा प्रस्तुत क्रिया और गति के चित्रों में यथास्थिति को बदलने की बेचैनी स्पष्ट है।

उठो मेरे सोये हुए धागों, उठो कि दर्जी की मशीन चलने लगी है।
उठो कि धोबी पहुॅच गया है घाट, उठोकी नंग–धडंग बच्चे जा रहे है स्कुल।
मुझे आदमी का सडक पार कर लेना, हमेशा अच्छा लगता है।
क्योंकि इस तरह, एक उम्मीद सी होती हैं, कि दुनिया जो इस तरफ हैं
शायद उससे कुछ बेहतर हो, सडक के उस तरफ।

उनकीकविताओमें लोकजीवन का चित्रण देखने को मिलता है। उनकी कविताओं के बिम्ब लगभग लोकजीवन की झलक दिखाते है!

मैने गंगा को देखा एक रोहू मछली की, डबडब ऑख मे।
जहॉ जीने की अपार तरलता थी/जहॉ एक बुढा मल्लाह रेती पर खडा था/...... बूढा खुश था/वर्ष के उन सबसे उदास दिनों मे भी। मै हैरान रह गया यह देखकर/ कि गंगा केजल मेंकितनी लम्बी और शानदार लगती हैं। एक बूढे आदमी के खुश होने की परछाई।

केंदारनाथसिंह जन कविता के पक्षधर है सामाजिक जागरूकता को रचनाशिलता के लिए जरूरी मानते है। इनकी कविताओं में बौध्दिक चिंतन और संघर्ष दिखाई देता है।

इस तरह हम देख सकते है, की केदारजी की कविताओं मे ग्रामीण परिवेंश कीझलक, लोकजीवन, उनकी वास्तविकता का चित्रण। गॉव के प्रति लगाव, आदमी की स्थितियों का चित्रण उसकी संघर्ष का चित्रण कवि जिवन की गती को बढाना चाहता हैं। वह धरती से जुडे हुए कवि है। उनके काव्य में प्रकृति का चित्रण भी हमे देखने को मिलता है। सांकेतिकता के माध्यंम से वे वास्तव का चित्रण करते है।

1) समकालीन हिंदी कविता– विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
2) हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
3) हिंदी साहित्य का प्रवृतिपरक इतिहास– सभापती मिश्र
4) आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास –डॅा. सूर्यनारायण रणसुभे
5) समकालीन हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org